

संस्कार सुधा

काव्य-कथा, विज्ञान-ज्ञान की, बरस रही है अमृत धार। है संस्कार-सुधा यह अनुपम, मिलें जहाँ अध्यात्म विचार ॥

R.N.I. - RAJHIN/2015/69329

INDIA POST REG No. - RJ/UD/29-133/2023-2025

वर्ष : 10

अंक : 9

प्रकाशन तिथि: 20 जुलाई 2025

सम्पादक : राजकुमार शास्त्री

मूल्य : 10/-

पृष्ठ : 12

संपादकीय-सुधा

तीर्थधाम मंगलायतन का अनुकरणीय नवाचार

- राजकुमार, द्रोणगिरि

तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ़ ने अनेक नवाचार किए हैं उनमें अनादि अनन्त नव वर्ष एवं वीर शासन जयन्ती पर्व श्रावण कृष्ण एकम को उत्साह पूर्वक मनाने के लिए विगत 3 वर्षों से आदरणीया बाल ब्रह्मचारी कल्पना दीदी के मार्गदर्शन में उत्सव आयोजित किया जा रहा है जो निश्चित ही अनुकरणीय है प्रचारणीय है।

सारी ही दुनिया में ईस्वी सन् के अनुसार नव वर्ष बहुत ही हृषोल्लाषपूर्वक मनाया जाता है। हम भारतीय भी अपनी भारतीय संस्कृति को भुलाते हुए जिनमें बालक, किशोर, युवा ही नहीं बल्कि वृद्ध भी उल्लङ्घित होते हैं और एक दूसरे को नववर्ष की बधाइयाँ देते हैं। नव वर्ष के नाम पर अनेक जैन संगठन/संस्थाएँ भी ईस्वी सन् अर्थात् अंग्रेजी नव वर्ष को अपने ढंग से बड़े ही उत्साह पूर्वक मनाकर लोगों को आकर्षित करते हैं (किसी अपेक्षा से शायद लाभदायक रहा हो) परन्तु यह भी एक तथ्य है कि यह भारतीय एवं जैनत्व की संस्कृति/संस्कारों के विपरीत ही है।

जो शाश्वत नव वर्ष तीर्थधाम मंगलायतन की ओर से मनाया /प्रचारित किया जा रहा है वह निश्चित ही अभिनन्दनीय है। कम से कम हम इस दिन यह तो समझ सकेंगे कि हमारे आगम के अनुकूल कब से नई शुरुआत होती है, नया वर्ष होता है। संयोग से इसी दिन भगवान महावीर स्वामी की दिव्य ध्वनि खिरने का दिवस भी है जिसे हम वीर शासन जयंती के रूप में मनाते हैं इस दृष्टिकोण से भी हम भगवान महावीर स्वामी और उनकी दिव्य देशना को याद करते हुए इस उत्सव को मना कर अपने परिजनों को वीतरागी संस्कृति से जोड़ सकते हैं।

इस वर्ष भी श्रावण कृष्ण एकम को प्रातः एवं रात्रि में गोष्ठियों का ऑनलाइन आयोजन किया गया जिनमें संख्या कितनी थी यह अधिक महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन उन गोष्ठियों में जो

विषय प्रस्तुत किए गए वे अत्यन्त जीवनोपयोगी एवं आगम आधारित थे।

मंगलार्थी छात्रों, सर्वार्थसिद्धि भोपाल तथा आत्मार्थी कन्या निकेतन की बालिकाओं ने इस गोष्ठी में अनुकरणीय चिंतन बिन्दु प्रस्तुत किये जो हर एक स्तर पर प्रचारित करने योग्य हैं।

नव वर्ष उत्सव की संयोजिका श्रीमती प्रियंका जैन बैंगलुरु जो बहुत ही गंभीर चिंतक हैं, उत्कृष्ट श्रावकाचार का पालन करती हैं, आगम का गहन अभ्यास करते हुए किस प्रकार घर-घर चर्चा धर्म की हो, सभी का जीवन चरणानुयोग से सुरभित हो इस प्रकार की भावनाएँ उनके हृदय में कूट-कूट कर भरी हुई हैं, वे स्वयं अनेक विषयों के बारे में सोचती हैं, लिखती हैं, संस्थाओं के छात्र-छात्राओं को गोष्ठियों में जुड़ने के लिए प्रेरित करती हैं उन्हें विषय उपलब्ध कराती हैं केवल इस भावना से कि इन्हीं बालक-बालिकाओं द्वारा श्रावकाचार का संरक्षण होगा इसके लिए वह बहुत बधाई के पात्र हैं।

सभी से निवेदन है कि यदि आपने गोष्ठी का सीधे लाभ नहीं लिया है तो अभी भी तीर्थधाम मंगलायतन के यूट्यूब चैनल पर दोनों सभाओं को सुने अपने बच्चों को सुनाएँ निश्चित ही आप प्रभावित होंगे लाभान्वित होंगे।

निश्चित ही यह एक गंगोत्री की तरह पतली सी धारा है जो भविष्य में विशाल गंगा का रूप लेगी ऐसी में आशा रखता हूँ।

सर्वार्थसिद्धि अपने दूसरे वर्ष में प्रवेश कर रही है आप सभी का यह विशेष स्नेह, विश्वास व सहयोग है जिसके कारण गत वर्ष हम संस्था को भली-भांति संचालित कर सके, इसी बीच एक एकड़ भूमि लेने के लिए हिम्मत कर सके और अब दूसरे वर्ष में 33 बालिकाओं को लेकर सर्वार्थसिद्धि को संचालित करने की ओर अग्रसर हैं।

जैसा कि हम अनेक बार कह चुके हैं कि हमारा उद्देश्य है कि यहाँ रहने वाली बालिकायें आगम ज्ञान के साथ-साथ, श्रावकाचार की संस्कृति से जुड़ें, अपने परिवार और समाज के प्रति अपने दायित्व को समझें। उनका सर्वांगीण विकास हो ऐसा हमारा प्रयास है।

गुरु पूर्णिमा एवं वीर शासन जयंती पर्व के अवसर पर बालिकाओं ने अपनी भावनायें प्रस्तुत कीं जिन्हें सुनकर लगा कि इन बालिकाओं के द्वारा प्रस्तुत किए गए बिंदु सभी तक पहुँचें अन्य सभी लाभान्वित होंगे एवं प्रेरणा मिलेगी।

आपसे निवेदन है कि इन बालिकाओं की रचनाओं को विशिष्ट कला पक्ष एवं भाव पक्ष की दृष्टि से न देखकर उन्होंने जिस परिपेक्ष्य में अपनी बुद्धि से प्रस्तुत किया है उसी स्तर पर सराहना करें वह आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करें।

एक वर्ष पूर्ण होकर दूसरे वर्ष में प्रवेश होने के प्रसंग में कुछ स्मरणीय छाया चित्रों को भी इस अंक में प्रस्तुत किया जा रहा है आप सभी का स्नेह विश्वास व सहयोग बना रहे तो निश्चित ही सर्वार्थसिद्धि सर्व प्रयोजनों को सिद्ध करने वाली बनेगी – ऐसा विश्वास है।

सुभाषित-सुधा

णाणुज्जोवो जोवो णाणुज्जोवस्स णाथि पडिघादो ।
दीवेइ खेतमप्यं सूरो णाणं जगमसेसं ॥
(ज्ञानज्योतिरेव द्योतः ज्ञानोद्योतस्य नास्ति प्रतिधातः ।
दीप्यति क्षेत्रमल्पं सूर्यः ज्ञानं जगदशेषम् ॥)

ज्ञान रूप प्रकाश ही यथार्थ प्रकाश है क्योंकि ज्ञान रूपी प्रकाश में रहने वाले का पतन नहीं होता, सूर्य अल्प क्षेत्र को प्रकाशित करता है और ज्ञान समस्त जगत को।

Light in the form of knowledge is real light because one who lives in the light of knowledge never falls. The sun lightens a little and knowledge lightens the whole world.

वदनं प्रसादसदनं हृदयं सुधामयो वाचः ।
करणं परोपकरणं येषां केषां न ते वंद्याः ॥
जिनका मुख प्रसन्नता का घर है, हृदय दया सहित है, वचन अमृतस्रावी है और कार्य परोपकार करना है, वे सज्जन किनके वंदनीय नहीं हैं? सभी के वंदनीय हैं।

जीतेंगे हम ये वादा करो, कोशिश हमेशा ज्यादा करो।
किस्मत रूठे पर हिम्मत ना टूटे, मजबूत इतना इरादा करो ॥

काव्य-सुधा

गुरु का मौल

- मुस्कान जैन, शास्त्री प्रथम वर्ष, सर्वार्थसिद्धि
मेरे गुरु ने मुझे चलना सिखाया है
अंधेरी रात में रवि सा जलना सिखाया है।
कभी गिरना नहीं पथ में अगर गिर जाओ, ठोकर खा
तो तत्काल उठकर के चलना भी सिखाया है।
पंख सभी हमारे बंद पिजरे मे कैद थे,
उन्हें एक नई उड़ान दी आपने।
खुला आसमान और नई मुस्कान दी आपने,
पंख तो थे पर सुकून न था
उड़ तो सकते थे पर जुनून न था
जब हौसले की छाया पड़ी आपकी
तब उड़ना सीख गये।
अब हवाओं से क्या तूफानों से भी लड़ना सीख गये
भगवान को भी भगवान बनने के लिए
गुरु का ही ज्ञान काम आया था
माँ ने तो उंगली पकड़ कर कहा
चलो, पर चलना कहाँ है, ये गुरु ने ही तो बताया था।
हर प्रकार से नादान थे हम
गीली मिट्टी के समान थे हम
आकार दे कर कड़ा बना दिया
मिट्टी से हमें सोना बना दिया।
ज्ञान का दीपक वो जलाते हैं
माता-पिता के बाद वो आते हैं
माता देती है जीवन,
पिता करते हैं सुरक्षा ।
जीवन को सजाते हैं
वो गुरु कहलाते हैं ॥।
गुरु तो लिख दिया है,
आगे लिखने के लिए शब्द कहाँ से लाऊँ
कलम में मेरी इतनी ताकत नहीं
जिन्होंने मुझे लिखना सिखाया है
उनके लिए क्या कुछ लिख पाऊँ।
गुरु वो व्यापारी है, बिना किसी
मौल का सलीक सिखा जाते हैं।
स्कूल की राह तक माँ बाप ने ही तो पहुँचाया था।
पर जाना कहाँ है, ये गुरु ने ही बताया था।
नहीं सी अंगुलियों से कितना कुछ लिखवाया है।
लौकिक पारलौकिक का फर्क हमें बताया है।
दो अक्षरों का है ये अक्षर
पर इससे बड़ा नहीं कोई अक्षर
हमारे भविष्य को उज्ज्वल बनाते हैं,
ग़लत रास्ते पे जाने से हमको बचाते हैं ॥।

स्वतन्त्रता की घोषणा

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के वस्तु परिणमन की स्वतन्त्रता के दिग्दर्शक मङ्गल प्रवचनों का अद्भुत सङ्कलन

गतांक से आगे.....

उपादान-निमित्त संवाद

(भैया भगवतीदास कृत)

निमित्त तो आरोपमात्र कारण है, उसकी उपादान में तीनों काल नास्ति है और अस्ति-नास्तिरूप ऐसा अनेकान्त, वस्तु का स्वरूप है। एक पदार्थ दूसरे पदार्थ में कुछ कर सकता है; इस प्रकार की मान्यता से पदार्थों की स्वतन्त्रता नहीं रहती और एकान्त आ जाता है।

इसलिए उपादान-निमित्त के संवाद के द्वारा जो वस्तुस्वरूप समझाया गया है, उसे जानकर, हे भव्य जीव! तुम खेद का परित्याग करो। परद्रव्य की सहायता आवश्यक है, इस मान्यता का परित्याग करो। अपनी आत्मा को पराधीन मानना ही सबसे बड़ा खेद है। अब आत्मा के स्वाधीन स्वरूप को जानकर उस खेद का परित्याग करो, क्योंकि श्री जिनागम का प्रत्येक वचन वस्तुस्वरूप को स्वतन्त्र घोषित करता है और जीव को सत्य पुरुषार्थ करने के लिए प्रेरित करता है।

यह बात विशेष ध्यान में रखना चाहिए कि निमित्त वस्तु है तो अवश्य। सच्चे देव-शास्त्र-गुरु को न पहचाने और कहे कि निमित्त का क्या काम है? उपादान स्वतन्त्र है, इस प्रकार उपादान को जाने बिना यदि स्वच्छन्दी होकर प्रवृत्ति करे तो इससे उसका अज्ञान ही दृढ़ होगा - ऐसे जीव के धर्म तो हो ही नहीं सकता, उलटा शुभराग को छोड़कर अशुभराग में प्रवृत्ति करेगा। श्रीमद् राजचन्द्रजी ने आत्मसिद्धि में कहा है कि -

उपादान का नाम ले, यदि यह तजे निमित्त।

पाये नहिं परमार्थ को, रहे भ्रान्ति में स्थित।

ध्यान रहे कि यहाँ उपादान का मात्र नाम लेकर जो निमित्त का निषेध करता है - ऐसे जीव की बात है किन्तु जो उपादान के भाव को समझकर, निमित्त का लक्ष्य छोड़ देते हैं, वे सिद्धस्वरूप को प्राप्त होते हैं। इस गाथा को उलटकर कहा जाए तो -

उपादान का भाव ले, यदि यह तजे निमित्त।

पाये वह सिद्धत्व को, रहे स्वरूप में स्थित॥

अज्ञानी जीव, सत् निमित्त को नहीं जानता और उपादान को भी नहीं जानता, वह जीव तो अज्ञानी ही रहता है किन्तु जो जीव अपने उपादान स्वभाव के स्वतन्त्र भावों को पहचानकर, उस स्वभाव की एकाग्रता के द्वारा निमित्त के लक्ष्य को छोड़ देते हैं, वे जीव अपने स्वरूप में स्थित रहते हैं; उनकी भ्रान्ति का और राग का नाश हो जाता है और वे केवलज्ञान को प्राप्त कर मुक्त हो जाते हैं।

जो जीव, उपादान-निमित्त के स्वरूप को नहीं जानता और मात्र उपादान की बातें करता है तथा सच्चे निमित्त को जानता ही नहीं, वह पापी है। यहाँ पर यह आशय नहीं है कि निमित्त से

कोई कार्य होता है किन्तु यहाँ अपने भाव को समझने की बात है। जब जीव के सत् निमित्त के समागम का भाव, अन्तर से नहीं बैठा और स्त्री-पैसा इत्यादि के समागम का भाव जम गया, तब उसे धर्म के भाव का अनादर और संसार की ओर के विपरीतभाव का आदर हो जाता है। अपने में वर्तमान तीव्र राग है, तथापि वह उस राग का विवेक नहीं करता, अर्थात् शुभाशुभ के बीच व्यवहार से भी भेद नहीं करता; वह जीव विपरीतभाव का ही सेवन करता रहता है।

वह विपरीतभाव किसका? क्या तू वीतराग हो गया है? यदि तुझे विकल्प और निमित्त का लक्ष्य ही न होता तो तुझे शुभ निमित्त के भी लक्ष्य का प्रयोजन न होता, किन्तु जब विकल्प और निमित्त का लक्ष्य है, तब तो उसका अवश्य विवेक करना चाहिए। इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि निमित्त से कोई हानि-लाभ होता है परन्तु अपने भाव का उत्तरदायित्व स्वयं स्वीकार करना होगा। जो अपनी वर्तमान पर्याय के भाव को और उसके योग्य निमित्तों को नहीं पहिचानता, वह त्रैकालिकस्वभाव को कैसे जानेगा?

जीव या तो निमित्त से कार्य होता है - यह मानकर पुरुषार्थीन होता है अथवा निमित्त का और स्व-पर्याय का विवेक भूलकर स्वच्छन्दी हो जाता है - यह दोनों विपरीतभाव हैं। वे विपरीतभाव ही जीव को उपादान की स्वतन्त्रता नहीं समझने देते। यदि जीव विपरीतभाव को दूर करके सत् को समझे तो उसे मोक्षमार्ग होता है और जब अपने भाव से सत् का समझे तब सत् निमित्त होते ही हैं क्योंकि जिसे सत् स्वभाव के प्रति बहुमान है, उसे सत् निमित्तों की ओर का लक्ष्य और बहुमान हो ही जाता है। जिसे सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के प्रति अनादर है, उसे मानों अपने ही सत् स्वरूप के प्रति अनादर है और सत् स्वरूप का अनादर ही निगोदभाव है, उस भाव का फल निगोदशा है।

इसलिए जिज्ञासुओं को सभी पहलुओं से उपादान-निमित्त को जो जैसे हैं, उन्हें उसी प्रकार ठीक जानकर निश्चय करना चाहिए। यह निश्चय करने पर पराधीनता की मान्यता का खेद दूर हो जाता है और स्वाधीनता का सच्चा सुख प्रगट होता है।

ग्रन्थ कर्ता का नाम और स्थान -

नगर आगरा अग्र है, जैनी जन को वास।

तिह थानक रचना करी, भैया स्वमति प्रकाश ॥ 46 ॥

अर्थ - आगरा शहर (तीर्थधाम मङ्गलायतन के निकट) अग्रगण्य नगरों में से है, जिसमें जैन लोगों का (अच्छी संख्या में) निवास है। वहाँ पर भैया भगवतीदास ने अपनी बुद्धि के प्रकाशानुसार यह रचना की है अर्थात् अपने ज्ञान के प्रकाश के लिए यह रचना की है। (क्रमशः:)

आधुनिक युग में स्त्री-पुरुष के समानता की चर्चा इस तरह जोरों पर है कि वीर शासन द्वारा एक स्त्री को लेकर जो नियम बताये गए, जो विधान कहे गए हैं उन पर आज वर्तमानकालीन वनिताओं द्वारा पक्षपात का आरोप लगाया जाता है -

चाहे स्त्री मुक्ति की बात हो, जिनप्रतिमा अभिषेक करने की बात हो, शील की मर्यादाओं के पालन की बात हो, विधवा या परित्यक्ता होने पर विवाह न करने की अनुमति की बात हो, नारी के द्वारा यथासम्भव नौकरी से बचने की सलाह हो, मासिक काल की मर्यादा पालन आदि सभी क्षेत्रों में नारी सर्वज्ञ प्रणीत जिनशासन को आज शङ्का की दृष्टि से देखने लगी है, उनको सर्वज्ञदेव की वीतरागता पर संशय होने लगता है। अरे! यहाँ तक भाव आ जाते हैं कि वीरशासन में वनिता जीवन पर बहुत प्रतिबन्ध लगाए गए हैं, लेकिन विचार कीजिये! ये कथन वस्तुस्वरूप के आधार पर कहे गये हैं या मनमानी पूर्वक ?

मनमानी पूर्वक कहे गए हों ये तो प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि जनवाणी में मनमानी चलती है, जिनवाणी में मनमानी के लिए कोई अवसर नहीं है।

अरे! वीरशासन तो वस्तु स्वरूप पर आधारित शासन है, उसमें सर्वज्ञ देव की भी नहीं चलती, वे तो केवल जो सत्य है उसे बता रहे हैं।

इस बात पर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए कि -

सर्वज्ञ देव ने जैसा जाना वस्तु का स्वरूप वैसा नहीं है। वस्तु स्वरूप जैसा है वैसा सर्वज्ञ के ज्ञान रूपी दर्पण में झलका है।

इस शासन में निगोदिया से लेकर नारायण तक, तिर्यज्च से लेकर तीर्थकर तक सबके साथ समान व्यवहार की बात कही है। वहाँ नारी के साथ भेदभाव क्यों और कैसे होगा ?

वीरशासन में तो वनिता भी भावी सिद्ध और वर्तमान में अनन्त शक्तियों की पिंड भगवान आत्मा है। इसमें तो हर वनिता को सन्देश है कि वह स्वयं को पहले में पहले आत्मा जाने।

अब वस्तुस्वरूप में यदि द्रव्य स्त्री वेद के साथ निर्ग्रन्थ वेश और क्षायिक समकित धारण करने की पात्रता नहीं है तो वीर शासन क्या करे..

जैसे - शक्कर का स्वभाव मीठा होता है और मिर्च का स्वभाव तीखा होता है अब यदि मिर्च यह विचार करे कि मैं तीखी क्यों हूँ, मीठी क्यों नहीं? तो भाई मिर्ची का स्वभाव ही तीखापन है, उसमें मीठेपन की योग्यता ही नहीं है, इस प्रकार समझना चाहिए।

खुशबू जैन शास्त्री, केसली सागर, अध्यापिका सर्वार्थसिद्धि

और कहा जाए तो स्त्री पर्याय से मोक्ष की प्राप्ति तो नहीं हो सकती लेकिन मोक्षमार्ग का प्रारम्भ तो हो सकता है ना, देशसंयम धारण करने के अवसर तो हैं, यदि भाव से स्त्रीवेद है तो मुक्ति का विधान जिनागम में वर्णित है।

तथा जिन प्रतिमा अभिषेक न करने की बात जो कही गई है उसमें भी स्त्रियों की अशुद्धि और अशुचिता आदि अनेक कारण से कहा गया है।

परन्तु हमें तो यह विचार करना चाहिए कि भेद ज्ञान तो हमें हर वेद के शरीर से करना है पुरुष भी पुरुष शरीर के कारण उत्तम नहीं है।

दूसरे पक्ष को लेकर भी यदि बात कही जाए तो वस्तु का स्वरूप ही वास्तव में ऐसा है।

समकित होने के बाद स्त्री वेद का बन्ध नहीं होता।

दूसरे गुणस्थान में उसकी बन्ध व्युच्छिति हो जाती है।

यही उस गति की हीनता बता रही है। इसमें प्रसव के दुख, मासिक काल के दुःख हैं अब यह दुख है तो है। भला इसमें वीर शासन क्या करे? क्योंकि वस्तु का स्वरूप ही वास्तव में ऐसा है।

वीरशासन में यदि स्त्री पर्याय की हीनता कही गई है तो वहाँ सतियों का गुणानुवाद भी कम नहीं है।

स्त्री को शिक्षित होने की प्रेरणा भी आदिकाल से दी गई।

ब्राह्मी लिपि ही स्त्री नाम से है।

मुक्ति को वधू की उपमा दी गई है।

जिनवाणी को माँ की उपमा और तो क्या कहें तीर्थकर की माता को तो जगत जननी कहा गया है।

नारी को चरणानुयोग की रक्षिका कहा गया, पहली गुरु कहा गया।

साथ ही शील मर्यादा पालन की बात है तो वह पुरुषों के लिए भी बताई गई है।

सेठ सुदर्शन जयकुमार आदि के गीत जिनागम में गाये गए हैं।

आज हम यदि वर्तमान स्थिति पर दृष्टिपात करें, तो शील विरुद्ध आचरण के कारण हमें अनेक घटनाएँ हमारे सामने घटित होती हुई दिखाई देती हैं।

लव जिहाद जैसी घटनाएँ बलात्कार, गर्भपात जैसी अनेक परिस्थितियाँ आज शील की मर्यादा पालन न करने के कारण ही उत्पन्न हो रही हैं।

परन्तु वीरशासन में जो शील की मर्यादा पालन की बात कही गई है वह आज वास्तव में नारी के हित में नजर आ रही है।

विधवा अथवा परित्यक्ता विवाह की अनुमति नहीं दी गई है इस बात पर भी यदि हम विचार करें तो नारी के हित में हमें दिखाई देती है।

पहले तो आराधना का सुनहरा अवसर है यदि विधवा स्त्री में निस्संतान है तो पहले यदि वह आत्म कल्याण न कर पाई हो, तो अब उसे दोबारा अवसर मिला है कि वह अपना आत्म कल्याण कर सके।

विचारिये! क्या यह अवसर एक विवाहिता के जीवन से ऊँचा है या नहीं?

यदि राजुल ने विवाह किया होता तो क्या आज उनका जीवन सार्थक हो पाता?

वास्तव में तो वीरशासन वनिता को वैधव्य के बाद और उत्तम जीवन जीने के मार्ग पर बढ़ाता है।

ऐसा दिशाबोध देता है जिससे भविष्य में कभी वैधव्य नहीं मिलेगा; परन्तु सामान्य या हल्की सोच वालों को यह लगता है कि वीर शासन में वनिता जीवन पर बहुत प्रतिबंध है; लेकिन यदि गंभीरता से विचार करते हैं तब हम यह परिणाम पाते हैं कि वीर शासन में कहीं भी ऐसा उपदेश नहीं है जो वनिताओं के जीवन का शोषण करता है।

और यदि बात कही जाए तो वीरशासन में विधवा स्त्री को अपशकुनी नहीं कहा गया।

जिनागम में वर्णित षट् आवश्यकों में से किसी भी आवश्यक का पालन करने के लिए विधवा स्त्री को मना नहीं किया गया है। उसे एक कमरे में बंद रहने और मुंडन करने हेतु बाध्य नहीं किया गया।

लेकिन यदि वह पुनर्विवाह करती है तो उसका जीवन स्तर पुनः निचले से निचला हो जाएगा क्योंकि वह अपने पति के घर से फिर किसी अन्य पुरुष के घर में जाकर के उसमें अपनत्व पूर्वक उसे समर्पण करना पड़ेगा। जिससे उसके शरीर का शोषण होंगा।

अरे! हम तो उन सतियों के अनुयायी हैं। जिन्होंने पति के रहते हुए भी उनकी उपेक्षा के बीच अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए उच्च स्तर का जीवन जिया। इसलिए आज अंजना, सीता जैसी सतियों का प्रथमानुयोग में सतियों की श्रेणी में स्थान प्रमुख है।

विचारिये यदि वे पुनर्विवाह करतीं तो क्या इतना सम्मानित जीवन कभी जी पातीं?

अरे हमें तो नारी स्वतंत्रता के पहले आत्मा की स्वतंत्रता के बारे में सोचना चाहिए? क्योंकि नारी तो थोड़े काल के लिए हैं;

लेकिन आत्मा तो अनादि अनन्त तत्व है, आत्मा यदि कर्मों से स्वतंत्र हुआ तो नारीपने से स्वतंत्रता तो स्वयं ही मिल जाएगी।

अंत में वनिता को सामान्य जीवन जीना है या सम्मानित जीवन।

वीरशासन में तो दोनों स्थितियाँ बता दी गई हैं कि सामान्य जीवन जिएंगे तो क्या परिणाम होगा और सम्मानित जीवन जीएंगे तो क्या परिणाम होगा। अब यह हमारे हाथ में है कि हमें किस प्रकार के जीवन का चयन करना है।

इस तरह अनेक बिंदुओं के माध्यम से यह ही पुष्टि होती है कि वीरशासन में कहीं भी वनिता जीवन के शोषण की बात नहीं कही गई है।

अतः वीरशासन शोषित वनिता जीवन का उपदेश नहीं, अपितु पोषित आत्मिक जीवन का उपदेश है।

गुरु की सीख

- रौनक जैन, प्राक् शास्त्री प्रथम वर्ष, सर्वार्थसिद्धि जब पथ भटक गये हम तो

बेचैनी से है जुझे
पड़े कसमस में हम ऐसे
कहा जाये कहा रूठे
सहारा आपका पाया तो
सुध-बुध आ गई हमको
गुरु ऐसे ही ही पाये हैं
जिन्हें पाकर के चेहरे पर
प्रसन्नता आ गई हमको
सलाह ऐसी मिली हमको कि

धीरज से ही बढ़ा तुम
हजारों और लाखों में अलग ही तो चमकना तुम
दर्शन में ही रहना तुम
प्रदर्शन न दिखाना तुम
जमीं पर ही तो रहना तुम
अम्बर छू दिखाना तुम
शिक्षा ऐसी मिली हमको
हमेशा मुस्कुराओ तुम
तुम खुद भी हंसो और औरो को हंसाओ तुम
जब ऐसा ज्ञान पायेंगे
तो कुछ करके दिखायेंगे
घटा जब देखेगी हमको अम्बर तक छू दिखायेंगे ॥

सर्वप्रथम तो वीरशासन क्या है प्रस्तुत पंक्तियों से जानते हैं -

शासन नायक महावीर की
पावन खिरी दिव्य ध्वनि आज
भवि जीवों को मोक्षमार्ग का
पथ दिखलाया सुखकर आज
केवलज्ञानी महावीर भी
छ्यासठ दिन तक मौन रहे
कारण, कोई गणधर्न न था
दिव्य ध्वनि को झेल सके
शासन नायक वर्धमान की
प्रथम दिव्य ध्वनि खिरी थी आज
अतः वीर शासन की जयंती
सभी मनाते आज के दिन
वीर प्रभु के उपदेशों को
जीवन में अपनाएं।
हम सब की है यही कामना
मुक्ति पुरी को पा जाएं।

वीर शासन अर्थात् जिनशासन अर्हत् संस्कृति अथवा चारों अनुयोग या ज्ञान वैराग्य की संधि इसको स्व-पर में जीवंत रखना ही वास्तव में प्रभावना है।

क्रिया बाहर दिखती है इसलिए सम्यक् क्रियाओं के द्वारा बाहर में वीर शासन सजता है और सम्यक् परिणाम तथा सम्यक् अभिप्राय अंतरंग में वीर शासन अर्थात् आत्म अनुशासन को सजाते हैं।

बाह्य आडंबरों से युक्त इस दुनिया में किस प्रकार से चारों अनुयोगों द्वारा वीर शासन को जयवन्त रखा जा सकता है इसके लिए कुछ बिंदुओं पर चर्चा करते हैं।

सर्वप्रथम चरणानुयोग के माध्यम से चर्चा करते हैं -

1. पानी छानने का कपड़ा विधिवत् प्रयोग हो रहा हो, गीजर आदि का प्रयोग नहीं हो रहा हो तो समझिए कि जैनत्व के स्थूल चिह्न के रूप में वीर शासन सुरक्षित है वीर शासन जयवंत है।

2. यदि हमने धार्मिक कार्यों में ही सही पर नियम रूप से साड़ी परिधान को पहना तो समझिए कि आर्यिका की वेशभूषा के रूप में, नवधार्थकि के गणवेश के रूप में अथवा जिनालय की गरिमा के रूप में वीर शासन को जीवित रखा है।

अक्षरा जैन बड़ामलहरा, शास्त्री द्वितीय वर्ष, सर्वार्थसिद्धि

3. यदि हमने मासिक धर्म की मर्यादाओं का सही तरीके से पालन किया, बाहरी प्रदर्शन को गौण कर अपने रसोई घर को सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित रखा तो समझिए कि सत् पात्र आहार दान के रूप में जिन शासन को जयवंत रखा है।

4. रात्रि भोजन न किया न कराया तथा अभक्ष्य भक्षण न किया न कराया तो समझिए कि अहिंसक वृत्ति के रूप में जिन शासन को सुरक्षित रखा है।

5. घर खरीदते अथवा निर्माण कराते समय यदि मन्दिर की निकटता को मुख्य रखा तो समझिए की नित्य देव दर्शन के रूप में जिन शासन को जीवंत रखा।

6. यदि अपने घरों में जिनवाणी को स्थान दिया और मात्र स्थान ही नहीं दिया अपितु नित्य स्वाध्याय भी किया तो समझिए की पंचम काल में भी सर्वज्ञता के रूप में जिन शासन जीवंत हो रहा है।

7. नौकरों के भरोसे काम छोड़ने की आदत पर नियंत्रण किया रसोई घर हो या घर की साफ-सफाई नौकरों के भरोसे नहीं रहे तो समझिए कि अग्नि जल आदि संसाधनों के नियंत्रित प्रयोग के रूप में जिन शासन को सुरक्षित रखा है।

8. अपनी अगली पीढ़ी को अंतर्जातीय विवाह और विधवा विवाह आदि विकृतियों से दूर रखने में सफल हुए तो समझिए कि अगली पीढ़ी में वीर शासन सुरक्षित है।

9. भय आशा इत्यादि के वशीभूत होकर भी घरों में या बाहर भी कुदेव इत्यादि की पूजन नहीं की उनके समक्ष नतमस्तक नहीं हुए और और लोक मूढ़ता रूप गृहीत मिथ्यात्व से दूर रहे तो समझिए कि हमने समकित की पात्रता के रूप में वीर शासन को जीवंत रखा।

10. कैरियर के लिए शील की मर्यादाओं के साथ समझौता नहीं किया। अन्य से हाथ मिलाकर अभिवादन करने के स्थान पर अपने हाथ जोड़कर अभिवादन किया तो हमने शील की मर्यादा के प्रथम चरण रूप में वीर शासन को जीवंत रखा।

इन छोटे-छोटे चरणों के रूप में सदाचरण के द्वारा बाहर में वीर शासन सुरक्षित होगा तथा अंतरंग में वीर शासन को सुरक्षित रखने के लिए द्रव्यानुयोग और करणानुयोग के माध्यम से कुछ बिंदुओं पर चर्चा करते हैं।

शेष पृष्ठ 11 पर

सर्वार्थसिद्धि : ध्रुगति के यथ यर...



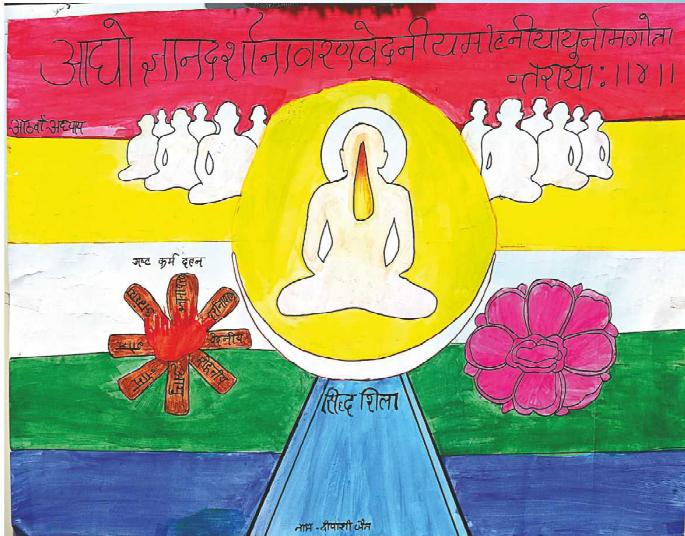
सर्वथिस्तिद्धि : प्रगति के यथ यर...



सर्वार्थसिद्धि : प्रगति के यथ यर...



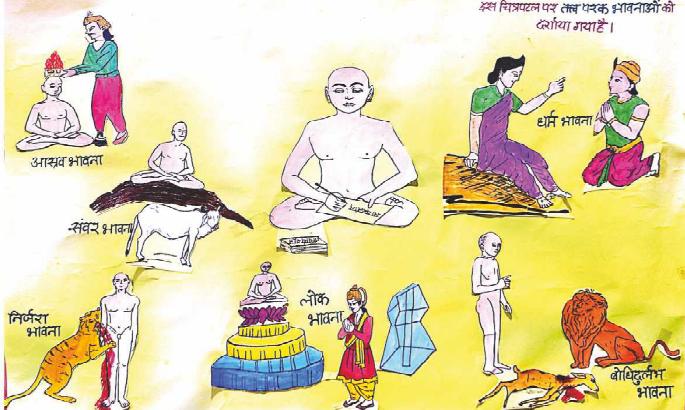
सर्वार्थसिद्धि : प्रगति के यथ यर...



अनियाराणसारंकर्तव्यात्याक्षालक्षंकर्तिर्परा-
लोकजीवित्तमध्यारोधयत्तत्वं प्राचिनतमनुप्रेष्ठा।
अन्यायकृ- ०५
संस्कृता - ०७

मुनिराज नित्य वर्ष भावनाओं का नित्य कर्त्ता रहते हैं। वर्ष १०८ कालों को भाव के सामान करा भया है। ऐसे भाव कुछ की भवन देते हैं। अनी ज्ञान ये बारु भवनों में राम की भवनों हैं। इन वर्ष भवनों की दी भग्नी से बदा भग्न है। भवनों में विद्यम-रक्ष के तथा अनिता की हृषि भवनों से लेकर रक्ष है।

इस विषयक एवं तत्त्व प्रदक्ष भावनाओं की विवरण गया है।



पृष्ठ 6 का शेष

द्रव्यानुयोग के माध्यम से -

हर परिस्थिति में सहज रहना अर्थात् दुखित अवस्था में भी साम्य भाव धारण करना तथा सुखी होने पर भी साम्यभाव धारण करना तो समझिए कि हमने क्रमबद्ध पर्याय रूप महा सिद्धांत के रूप में वीर शासन को सुरक्षित रखा है।

करणानुयोग के माध्यम से -

सीताजी की तरह स्वयं को बन में छोड़े जाने पर उसका दोषारोपण राम पर न करके अपने कर्मोदय का विचार किया तथा जैसे अंजना सती ने 22 वर्ष का वियोग होने पर उसका दोषारोपण पवनंजय पर नहीं किया अपितु अपने कर्मोदय का विचार किया तो समझिए की प्रथम श्रुतस्कंध में संकलित कर्म सिद्धांत के महान ग्रंथों के सार रूप में वीर शासन को जयवंत रखा।

इस तरह यदि हमने चारों अनुयोगों को सार रूप में अपने जीवन में उतार लिया तो समझिए कि करोड़ों रुपए देकर भी, हजारों उपवास करके भी, शुष्क तत्त्व चर्चा करके भी हम जो पुण्य जो विशुद्धि नहीं पा सकते जो व्यवहार प्रभावना नहीं कर सकते वो अर्हत् संस्कृति को इन रूपों में जीवंत रख कर सहज ही हो जाएगी और भविष्य में भी जिनशासन की छाया में शीघ्र भव का भाव होने से निश्चय प्रभावना भी हो जाएगी।

प्रथमानुयोग से महापुरुषों के जीवन जीने की कला को सीख सकें। हम सभी भी इन सिद्धान्तों को अपने बाह्य और अंतरंग जीवन में उतारें।

विचार-सुधा

नूतन वर्ष में जीवन निर्माण के लिए पांच नये संकल्प लें

प्रस्तुति - डॉ. अशोक जैन गोयल, दिल्ली

1. अपने आचरण और व्यवहार से जिनशासन को गौरवान्वित करें।

2. जीवन में ऐसा कोई काम/आचरण नहीं करना जिससे किसी भी जीव को अरिहंतदेव के शासन के प्रति अश्रद्धा/अविश्वास हो जाये।

3. ऐसी वाणी मत बोलना जिससे कि कोटि-कोटि जीवों का जीवन डगमग होने लग जाये।

4. जिनधर्म की शरण अनेक जन्मों के संचित पुण्यों के सुफल में मिली है, इसे कषायों के पोषण और अपने झूठे अहंकार को पुष्ट करने में मत खो देना। शेष रहे हर पल का सदुपयोग आत्मोन्नति में करें।

5. वही बोलना, वही सुनना, वही समझना और वही आचरण करना जिससे अरिहंत का शासन जयवंत और महिमावंत हो।

सच्चे जैनी हो तो जैन बनकर दिख लाओ। जैन-धर्म की महिमा को अपने चरित्र से तीन लोकों में पहुँचाओ।

काव्य-सुधा

शब्दमाला

- लब्धि जैन, शास्त्री द्वितीय वर्ष, सर्वार्थसिद्धि हे ज्ञानस्वभावी चैतन्य वीर गुण रत्नाकर न हो अधीर हम सबके जीवन शिल्पकार तुमने समझाया समयसार ॥

एक अद्भुत धधक उठी मन में निज पर विश्वास जगा तन में यश अपयश में ज्ञायक खिला स्व शाश्वत धाम अपूर्व मिला ॥ विश्वास किया हम पर हर पल तुमने दिखलाया मुक्ति महल बिखरे मणकों के मालाकार है दृढ़प्रतिज्ञ ! हे करुणासार ॥

'परिणय' 'विविधा' 'मध्यांतर' दो 'शाश्वत आराध' कर शिव पथ हो 'शांति से जीवन जियो' आत्म निज 'दृष्टिकोण' से हो परमात्म ॥

हर बाधाओं से हुए पार हो मुक्ति पथ में राजकुमार हम सबके हो जीवंत प्राण कुछ दे न सके हे सन्त्रिधान ॥ संस्कार सुधा रस ज्ञान दिया अपना सब कुछ ही दान किया यह ऋण हम कैसे चुका पाएँ बस यही प्रश्न मन को सताए ॥

ले जन्म सभी को दिया सार हो आप स्वयं के रचनाकार मत मन को आप विचलित करना इस कर के निज से मिलन करना ॥

तुम शब्दों के सागर अपार हो सब तथ्यों के एक सार हूँ निशब्द क्या बोलूँ मैं यह शब्द मल ही समर्पित है ॥

इस नए प्रयास में समर्पण है अरु निज में निज का अर्पण है सर्वार्थसिद्धि का नव प्रण है मेरे जीवन के दर्पण हैं ॥

क्या जिनकुल में वीर शासन पल रहा है!

- श्रीमती प्रियंका जैन, बैंगलुरु

प्रस्तुति - रौनक जैन, खड़ेरी, प्राक् शास्त्री द्वितीय वर्ष

कैसे कहें..जिनकुल में वीरशासन पल रहा है..

जब स्वच्छन्दी मन सुख की मरीचिका में स्वयं को छल रहा है ॥

जहाँ असत्य को मिल जाता कुछ क्षण में मेला ।

सत्य वहाँ पर अपराधी-सा खड़ा अकेला ।

जब असत्य के बहुमत में सत्य मौनपूर्वक चल रहा है ॥

कैसे कहें! जिनकुल में...

धार्मिक उत्सव अब मंगल गरिमा को तज रहे ।

थावर जीवों की हिंसा से मंच सज रहे ।

व्यक्तिवादी आयोजनों से जब प्रयोजन ही बदल रहा है ॥

कैसे कहें! जिनकुल में..

पूरब से पश्चिम अभिमुख है जीवन यात्रा ।

भाई-बहिनों में नित घट रही शील की मात्रा ।

वेश-केश भूषा में जब पाश्चात्य का रंग उछल रहा है ।

कैसे कहें..जिनकुल में वीरशासन पल रहा है!!

जैनाचार का पालन अब लगता अशक्य है ।

मांसाहार परोक्ष रूप करना भी शक्य है ।

जब स्वच्छंद भोग भोगने को मन मचल रहा है ।

कैसे कहें..जिनकुल में वीरशासन पल रहा है ।

निर्ग्रन्थ वेश को देख के युवा लज्जित होते ।

अनर्थ दण्ड के कार्यों से ही सज्जित होते ।

साधार्मियों में मधुर संवाद भी जब टल रहा है ।

कैसे कहें! जिनकुल में वीरशासन पल रहा है!!

श्रावक, श्रमण सभी अपने कर्तव्य से भटके ।

सुविधा भोगी जीवन की चाहत में अटके ।

जब देह की सेवा में ही जीवन निकल रहा है ।

कैसे कहें! जिनकुल में वीरशासन पल रहा है ।

दूध और अंडे को अब समकक्ष बताते ।

वीर के वारिस वीगन बन करके हर्षते ।

जब भावी पीढ़ी के मन में जिनर्थम द्रोह फल रहा है ।

कैसे कहें! जिनकुल में वीरशासन पल रहा है ।

अन्यमती जैनी बनते, तो हर्ष जताते ।

जैनी बालक वही करे, तो उसे डराते ।

इस कुटेव से जैन-बाल नहीं सम्भल रहा है ।

कैसे कहें! जिनकुल में वीरशासन पल रहा है..

या स्वच्छन्द मन सुख की मरीचिका में स्वयं को छल रहा है ।

समाधान -

यदि चाहते जिनकुल में हो, वीर का शासन ।

सप्त तत्त्व का सब जन को हो, सम्यक् भासन ।

तो सिद्धांत-प्रयोग संधि के हो न विराधक ।

तब ही कह पायेंगे हम हैं वीर-आराधक !!

तब ही कह पायेंगे हम हैं जिन-आराधक !!

श्रावण कृष्ण प्रतिपदा

(अनादि-अनंत/शाश्वत नववर्ष के अवसर पर काव्यगीत)

हम यूँ नववर्ष मनाएँ..

- श्रीमती प्रियंका जैन, बैंगलुरु

इन्द्रभूति गुरु गौतम-सा, हम भी नववर्ष मनाएँ ।

वीर की वाणी मिली हमें, हम भी सहर्ष अपनाएँ ।।

हम यूँ नववर्ष मनाएँ.. ऐसे नववर्ष मनाएँ..

1. अज्ञान दशा में गुरु बन के, शिष्यों की भीड़ बढ़ाई ।

ज्ञानी गुरु के शिष्य बनें, अब फिर से करें पढ़ाई ।

ज्ञान के मद को तजें और, पर महिमा को विसराएँ ।।

हम यूँ नववर्ष मनाएँ.. ऐसे नववर्ष मनाएँ..

2. काल द्रव्य जैसा अनादि है, वैसा ही मैं भी हूँ ।

वह स्थिर रहकर भी बदलता, ऐसा ही मैं भी हूँ ।

नित्यानित्य स्वभाव समझकर, निर्भय हम हो जाएँ ।।

हम यूँ नववर्ष मनाएँ.. ऐसे नववर्ष मनाएँ..

3. द्रव्य दृष्टि से निज को देखें, तभी नया कुछ होगा ।

मोह भाव मेरा जब टूटे, तभी नया कुछ होगा ।

लघुता से प्रभुता पथ पर, हम बढ़े सभी को बढ़ाएँ ।।

हम यूँ नववर्ष मनाएँ.. ऐसे नववर्ष मनाएँ..

4. अंतर में निज शासन हो, हो बाहर वीर का शासन ।

अन्य किसी से हो ना प्रभावित, दृढ़ हो सम्यक् भासन ।

ध्वल धरा के ध्रुव वासी बन, वीर निकट तिष्ठाएँ ।।

हम यूँ नव वर्ष मनाएँ.. ऐसे नववर्ष मनाएँ..

इन्द्रभूति गुरु गौतम-सा, हम भी नववर्ष मनाएँ ।

वीर की वाणी मिली हमें, हम भी सहर्ष अपनाएँ ।।

हम यूँ नववर्ष मनाएँ.. ऐसे नववर्ष मनाएँ..

नववर्ष से कुछ ऐसा करें प्रयास : निर्गत पंथ का हो अभ्यास

आईये ! इस नववर्ष से बढ़ाये कुछ कदम अहंत संस्कृति की ओर।

गृहस्थ जीवन भ्रष्ट जीवन नहीं है, इसमें भी अणुव्रतों का अमृत बरसता है; गुणव्रतों की गूँज सुनाई देती है और शिक्षाव्रतों की मधुर शहनाई बजती है जिससे भावी जीवन में सकल संयम की पात्रता का मङ्गल संगीत सजता है।

वास्तव में गृहस्थ दशा भी होती है बहुत प्यारी.. यदि इसमें शुरू होती है महाव्रतों की तैयारी।

क्या हमने जीवन में अब तक इस तरह की तैयारी की, तैयारी चालू भी हुई है !! यदि नहीं; तो इस नववर्ष से अणुव्रतों की रक्षा करने हेतु, गुणव्रतों के पालन की पात्रता विकसित करने हेतु अभ्यास रूप कुछ संकल्प लेते हैं।

1. कम से कम मन्दिरजी जाते समय चलते-चलते बात नहीं करेंगे ताकि ध्यान जमीन पर केन्द्रित रहे।

2. कोई स्तुति पाठ मन में बोलते चलेंगे ताकि कोई हमसे अनावश्यक बात नहीं कर पाए और हमारी विशुद्धि भी उत्तरोत्तर बढ़ती जाए।

3. यदि मन्दिरजी दूर हो, तो वाहन का प्रयोग जितना पहले छोड़ना शक्य हो, छोड़ देंगे ताकि हममें विनय भाव जागृत हो, हम थोड़ा पैदल भी चल सकें, यदि संभव हो चप्पल वाहन में ही छोड़कर पैदल चलकर मन्दिरजी पहुँचेंगे। बिना चप्पल चलने पर कील आदि चुभने के भय से स्वतः ही जमीन पर ध्यान रहेगा, जिससे जीवों की रक्षा रूप ईर्या समिति का अभ्यास होगा।

4. यदि घर मन्दिरजी के निकट है कि पैदल चल कर जा सकते हैं तो पैदल ही घर से निकलेंगे। कपड़े के जूते, मोजे भी नहीं पहिनेंगे।

9वीं प्रतिमा से नियम पूर्वक चप्पल का ग्रहण नहीं होता है।

चक्रवर्ती आदि सप्राट भी जब मुनिराज के दर्शन करने जाते हैं तो जंगल में बहुत पहले अपने 9 निधि, 14 रत्न (हाथी, घोड़े आदि) के वैभव को छोड़ देते हैं हम भी उनके इस गुण को अपनी आदत में लाने का यथासम्भव प्रयास करेंगे।

प्रस्तुति - सिद्धि जैन रानीपुर, शास्त्री प्रथम वर्ष, सर्वार्थसिद्धि

5. बिना चप्पल के जाने से हमें मन्दिरजी में प्रवेश के पूर्व पैर धोने का भाव भी बना रहेगा और देवदर्शन की विधि का विधिवत् पालन हो सकेगा।

6. अपने नगर के मन्दिरजी के दर्शन को को भी विशेष तीर्थ दर्शन के समान ही विनय और सम्मान देंगे।

7. मन्दिरजी में पैर धोने का पानी ऐसे स्थान पर रखेंगे, जिसके बाद तुरन्त मन्दिरजी में प्रवेश की सीढ़ियाँ हों, जिससे पैर धोकर वापस अशुद्ध भूमि से नहीं निकलना पड़े।

8. मन्दिरजी के अंदर मोजे पहिन कर प्रवेश नहीं करेंगे।

9. मोबाइल को स्विच ऑफ या साइलेंट पर रखकर ही प्रवेश करेंगे।

10. मन्दिरजी में शालीन वेशभूषा पूर्वक सिर ढँककर ही प्रवेश करेंगे।

11. मन्दिरजी में यथासम्भव लिफ्ट, पंखे ए.सी. आदि हिंसक सुविधाओं का प्रयोग करने से बचेंगे।

हमने संकल्प तो ले लिया परन्तु ये वर्ष भी निकल गया और आज से एक नया वर्ष प्रारंभ हुआ है हम ऐसा विचार करें क्योंकि पंडित दौलतरामजी भी अपनी छहढाला में कहते हैं -

ताते जिनवर कथित तत्त्व अभ्यास करीजे ।

संशय, विभ्रम, मोह त्याग आपो लख लीजे ॥

यह मानुष पर्याय सुकुल सुनिवो जिनवाणी ।

इह विधि गए न मिले सुमणि ज्यों उद्धिद समानी ॥

अर्थात् यह मनुष्य पर्याय बहुत ही दुर्लभता से प्राप्त हुई है। हम इसे ऐसे ही व्यर्थ ना गवाएं। करोड़ काम छोड़कर भी इस भव में हम सम्यक् दर्शन प्राप्त करने का प्रयत्न करें। इस कार्य से ही इस भव की सार्थकता होगी। जब तक सम्यक् दर्शन की प्राप्ति नहीं होती है तब तक हम अपने जीवन को षट् आवश्यक रूपी आभूषण से सुशोभित रखें और देव दर्शन संबंधी उपर्युक्त सभी निर्देशों को इस नव वर्ष से अपने जीवन में अपने रूप मंगल भावना को आज हम अपने हृदय में संजोते हैं।

- मोक्षिमा जैन सिवनी,

प्राक् शास्त्री प्रथम वर्ष, सर्वार्थसिद्धि

माधोपुर नामक ग्राम में एक गोपाल नाम का मूर्तिकार रहता था। गोपाल एक साफ दिल का दयालु और ईमानदार मूर्तिकार था। एक दिन गाँव के कुछ लोग उसके पास आये और उससे निवेदन किया कि 'क्या तुम गाँव में बन रहे मन्दिर के लिए एक मूर्ति बना कर दोगे ?'

उसने कहा कि 'ठीक है, मैं बना दूँगा।'

अगले दिन वह जंगल में प्रतिमा निर्माण के लिए पत्थर लेने गया और एक अच्छा पत्थर लाकर छैनी और हथौड़ी से उस पत्थर को मूर्ति का आकार देने लगा, वह पत्थर रोने लगा तो मूर्तिकार ने पूछा कि 'पत्थर तुम क्यों रो रहे हो ?'

पत्थर बोला - 'मुझे छैनी और हथौड़ी की मार से बहुत दर्द हो रहा है, क्या तुम किसी दूसरे पत्थर से मूर्ति का निर्माण कर सकते हो ?'

मूर्तिकार दयालु था उसने कहा 'ठीक है' और अगले दिन वह जंगल में उस पत्थर को छोड़ आया और दूसरा पत्थर मूर्ति निर्माण के लिए ले आया और मूर्ति बनाना शुरू कर दिया। उस दूसरे पत्थर को भी छैनी और हथौड़ी की मार से कष्ट हो रहा था लेकिन उसने उस दर्द को सहन किया और एक सुंदर मूर्ति का आकार लिया। फिर गाँव वालों ने उस मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा कर उस सुन्दर मूर्ति को मन्दिर में स्थापित कर दिया और उस पहले वाले पत्थर को जंगल से लाकर मन्दिर में सीढ़ी की तरफ लगा दिया।

एक दिन पहले वाला पत्थर फिर रोने लगा तो मूर्ति के पत्थर ने पूछा कि तुम क्यों रो रहे हो तो उसने कहा कि 'यदि मैं छैनी और हथौड़ी की मार से न डरा होता तो तुम्हारी जगह आज यहाँ लोग मेरी पूजा कर रहे होते।'

उस पहले पत्थर की तरह हमें भी हमारे माता-पिता और गुरुजन की डाँट कष्ट देने वाली दुःखदायी लगती है, अनुशासन हमें दर्द देने वाला लगता है, परन्तु ये हमारे हित और सुन्दर व्यक्तित्व के निर्माण के लिये होता है।

कहते हैं कि -

गुरुजी मारे धम-धम,
विद्या आये छम-छम ॥

भोजन चर्या सम्बन्धी सम्प्यक् संकल्प

- हर्षिता जैन, केसली, शास्त्री प्रथम वर्ष, सर्वार्थसिद्धि

मंच पर तो मंगलाचरण बहुत किये लेकिन आईये ! इस नववर्ष से अब लंच पर भी कुछ मंगल आचरण कर लें।

आयोजनों में मंच पर मंगलाचरण करने की होड़ लगती है, लेकिन उन्हीं आयोजनों में हम लंच पर दूर-दूर तक मंगल आचरण नहीं करते।

आईये ! आज इस नववर्ष पर कुछ संकल्प लें कि हम यथासम्भव -

1. खड़े-खड़े भोजन नहीं करेंगे ।
2. अमर्यादित भोजन नहीं करेंगे ।
3. कम से कम पर्व के दिनों में भोजन में अभक्ष्य वनस्पतियों का समावेश नहीं हो, इस सम्बन्धी सावधानी रखेंगे ।
4. अति आसक्ति पूर्वक भोजन नहीं करेंगे ।
5. जल्दी-जल्दी भोजन नहीं करेंगे ।
6. भूख से ज्यादा भोजन नहीं करेंगे ।
7. बहुत सारे व्यंजनों के आग्रह के साथ भोजन नहीं करेंगे ।
8. पंखे, ए.सी. के साथ भोजन नहीं करेंगे ।
9. सूर्य के प्रकाश में भोजन करेंगे ।
10. यथासम्भव जर्मीन पर बैठकर भोजन करेंगे ।
11. आहारदान की भावना संजोते हुए अतिथि संविभाग पूर्वक भोजन करेंगे ।
12. भोजन झूठा नहीं छोड़ेंगे ।
13. दो जन एक थाली में भोजन नहीं करेंगे ।
14. यथासम्भव सामायिक के काल में भोजन नहीं करेंगे ।
15. मौन सहित या विकथा रहित भोजन करेंगे ।
16. मोबाइल, टीवी, लैपटॉप देखते हुए भोजन नहीं करेंगे ।
17. परस्पर विरुद्ध आहार ग्रहण नहीं करेंगे ।
14. यथासम्भव देवदर्शन के पश्चात् ही भोजन करेंगे ।
15. संयम पोषण के लक्ष्य से सात्त्विक भोजन करेंगे ।

और सबसे बड़ा अमंगल भेद ज्ञान के बिना भोजन करना यानि अनाहार स्वभाव के स्मरण बिना भोजन नहीं करेंगे। इसी विषय में आदरणीय बाल ब्रह्मचारी पंडित रविन्द्रजी 'आत्मन्' भी कहते हैं -

भोजन स्वरूप नहीं मेरा, यह पुद्गल पिंड निवेदा।
इससे मम भिन्न चतुष्प्रय हूँ, निज में पूर्ण सुखी मैं ॥

अर्थात् हमारा लक्ष्य मात्र शिवपथ की ओर बढ़ना है तो इस नव वर्ष से मात्र मंच पर वचनों से नहीं लंच पर भी मन, वचन और काया से मंगल आचरण का वरण करके मुक्ति वधू का वरण करने के लिए अग्रसर हो।

कषाय विरेचन

- हर्षिता जैन, शास्त्री प्रथम वर्ष, सर्वार्थसिद्धि

क्रोध भाव को त्यागकर, क्षमा भाव उर धार।
 सभी जीव हैं सिद्धसम, काहे क्रोध बढ़ाय ॥
 न कोई वस्तु इष्ट है, न ही कोई अनिष्ट।
 वस्तुस्वरूप विचार कर, जीवन होत विशिष्ट ॥
 मान भाव है कुम्भ विष, जानो दुखद विभाव।
 तन-मन-धन अपने नहीं, सब हैं क्षणिकस्वभाव ॥
 कोई संयोग न नित्य है, सब अनित्य ही थाय।
 अब तुम सोचो जीयरा, काहे अहं बढ़ाय ॥
 माया नाशे सरलता, पशुगति में ले जाय।
 छेदन बन्धन दुःख बहु, कष्ट अनन्त लहाय ॥
 वक्र होत परिणाम ही, वक्रगति ही पाय।
 सरल स्वभाव न जानकर, जीवन व्यर्थ गवाय ॥
 तृष्णा जानो शत्रुवत्, परिग्रह को ही बढ़ात।
 तृष्णा लालच दोऊ सम, जीव कुगति ले जात ॥
 जोड़-जोड़ संचय करें, भोग-भोग मर जात।
 चिंतामणि के रतन सम मानुष गति गंवात ॥
 चार कषायें दुख भरी, चार गति पहुँचात।
 आत्मस्वरूप को ध्यायकर, मोक्षगति को जात ॥

Our Dearest Teachers

- Parinati Jain, Shashtri second year,
 Sarvartha siddhi. bhopal

Our dearest teachers, shining Bright. You fill Our lives with knowledge & light. With every lesson ' ! big and small.

You help us stand up, strong & tall.
 You guide our thoughts, you paint our minds, with stories, lessons, of various kinds.
 You patiently explain each complex phrase.
 Helping us through those learning maze.
 For every question, kind you've been
 A patient ear a guiding sheen
 You inspire us to reach for the sky.
 to never stop learning, to always try.
 On this special day, appreciation is expressed
 thank you for all that is done, every day. Respect and love are sent.

सहयोग-सुधा...

संस्कार परम शिरोमणि संरक्षक

डॉ. बासन्तीबेन शाह एवं डॉ. गार्गी समीर शाह, मुम्बई

श्री भागचन्द कालिका, उदयपुर

श्री आई.एस.जैन, मुम्बई

श्री अजितप्रसाद-वैभव जैन, दिल्ली

पण्डित नरेन्द्रकुमार जैन, जबलपुर

न्यायमूर्ति विमला-सुरेशजी जैन, आई.ए.एस., भोपाल

संस्कार शिरोमणि संरक्षक

श्री नरेश सिंधाई, नागपुर

श्री चंपालाल भण्डारी, बैंगलोर

डॉ. अरविन्द भाई दोशी, गोडल

श्री महीपाल-धनपाल ज्ञायक, बांसवाड़ा

पण्डित सिद्धार्थ कुमार दोशी, रतलाम

श्रीमती राजकुमारी जैन ध.प. श्री पुरुषोत्तम कुमार जैन, रुड़की

श्रीमती शकुंतला जैन ध.प. श्री सी एस जैन, देहरादून

संस्कार परम संरक्षक

श्री जिनेन्द्रकुमार मनीषकुमार जैन, दिल्ली

श्री उल्लासभाई जोबालिया, मुम्बई

श्री सुशील अजमेरा, रतलाम

श्री प्रकाशचन्द छाबड़ा, सूरत

श्री वीतराग-विज्ञान मुमुक्षु मण्डल, जबलपुर

संस्कार संरक्षक

श्री वज्रसेन-शोभित जैन, दिल्ली

श्री नरेशकुमार लुहाड़िया, दिल्ली

श्री सुरेन्द्रकुमार जैन, खरगापुर

श्रीमती पृष्ठलता जीजीबाई ध.प. श्री अजित जैन, छिन्दवाड़ा

डॉ. ममता जैन, शास्त्रविद्याम, उदयपुर

श्रीमती स्नेहलता ध.प. श्री शान्तिलालजी चौधरी, भीलवाड़ा

संस्कार सहायक

श्री मथुरालालजी जैन, इन्दौर

डॉ. पारसमल अग्रवाल, उदयपुर

श्रीमती मीनादेवी ध.प. श्री केशवदेव जैन, कानपुर

श्री देवीलाल जैन, मुम्बई

अशोक कुमार जैन, जबलपुर

दीपक अथर्णे शास्त्री, दुधगांव (सांगली)

यदि आप भी 'समर्पण' व 'संस्कार सुधा' के विचारों व कार्यपद्धति से सहमत हैं और उसे जन-जन तक पहुँचाने में सहभागी बनना चाहते हैं तो निम्न प्रकार से सहर्ष सहयोग प्रदान कर सकते हैं-

संस्कार परम शिरोमणि संरक्षक

(प्रति माह नाम प्रकाशित होंगे)

31 हजार रुपये

संस्कार शिरोमणि संरक्षक

(प्रति माह नाम प्रकाशित होंगे)

21 हजार रुपये

परम संरक्षक

(दो माह में नाम प्रकाशित होंगे)

15 हजार रुपये

संरक्षक

(दो माह में नाम प्रकाशित होंगे)

11 हजार रुपये

परम सहायक

(तीन माह में नाम प्रकाशित होंगे)

7100 रुपये

सहायक

(तीन माह में नाम प्रकाशित होंगे)

5100 रुपये

एक अंक प्रकाशन सहयोग

सदस्यता शुल्क - 100 रुपये एक वर्ष; 200 रुपये 3 वर्ष; 700 रुपये 15 वर्ष

7/05 हजार रुपये

पंजाब नेशनल बैंक, पंचशील मार्ग, उदयपुर के खाता क्रमांक 04

58000100404840 में जमा करा सकते हैं।

IFSC Code - PUNB 0045800

जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में तीन लोक

(गतांक से आगे)

(2) सिन्धु नदी का सम्पूर्ण कथन गंगा नदीवत् है। विशेष यह कि यह पद्म के पश्चिम द्वार से निकलती है। इसके भीतरी कमलाकार कूट में लवणा देवी रहती है। यह सिन्धुकुण्ड में स्थित सिन्धुकूट पर गिरती है। विजयार्ध की खण्डप्रपात गुफा को प्राप्त होती है। पश्चिम की ओर मुड़कर प्रभास तीर्थ के स्थान पर पश्चिम लवणसागर में मिलती है। इसकी परिवार नदियाँ 14000 हैं।

(3) हिमवान पर्वत के ऊपर पद्मद्रह के उत्तर द्वार से रोहितास्या नदी निकलती है जो उत्तरमुखी ही रहती हुई पर्वत के ऊपर 276 6/ 19 योजन चलकर पर्वत के उत्तरी किनारे को प्राप्त होती है, फिर गंगानदीवत् ही धार बनकर रोहितास्या कुण्ड में स्थित रोहितास्या कूट पर गिरती है। कुण्ड के उत्तरी द्वार से निकलकर उत्तरमुखी रहती हुई वह हैमवत् क्षेत्र के मध्य स्थित नाभिगिरि तक जाती है, परन्तु उससे दो कोस इधर ही रहकर पश्चिम की ओर उसकी चौथाई प्रदक्षिणा देती हुई पश्चिम दिशा में उसके अर्धभाग के सम्मुख होती है। वहाँ पश्चिम दिशा की ओर मुड़ जाती है और क्षेत्र के अर्ध आयाम प्रमाण क्षेत्र के बीचों-बीच बहती हुई अंत में पश्चिम लवणसागर में मिल जाती है। इसकी परिवार नदियों का प्रमाण 28,000 है।

(4) महाहिमवान पर्वत के ऊपर महापद्म हृद (द्रह) के दक्षिण द्वार से रोहित नदी निकलती है। दक्षिणमुखी होकर 1605 5/19 यो. पर्वत के ऊपर जाती है। वहाँ से पर्वत के नीचे रोहित कुण्ड में गिरती है और दक्षिणमुखी बहती हुई रोहितास्यावत् ही हैमवत् क्षेत्र में नाभिगिरि से 2 कोस/आधा योजन इधर रहकर पूर्व दिशा की ओर उसकी चौथाई प्रदक्षिणा देती है। फिर वह पूर्व की ओर मुड़कर क्षेत्र के बीच में बहती हुई अंत में पूर्व लवणसागर में गिर

जाती है। इसकी परिवार नदियाँ 28,000 हैं।

(5) महाहिमवान पर्वत के ऊपर महापद्म हृद के उत्तर द्वार से हरिकान्ता नदी निकलती है। वह उत्तरमुखी होकर पर्वत पर 1605 5/19 यो. चलकर नीचे हरिकान्ता कुण्ड में गिरती है। वहाँ से उत्तरमुखी बहती हुई हरिक्षेत्र के नाभिगिरि को प्राप्त हो उससे दो कोस इधर ही रहकर उसकी चौथाई प्रदक्षिणा देती हुई पश्चिम की ओर मुड़ जाती है और क्षेत्र के बीचों-बीच बहती हुई पूर्व लवणसागर में गिरती है। इसकी परिवार नदियाँ 56,000 हैं।

(6) निषध पर्वत के तिगिंछ द्रह के दक्षिण द्वार से निकलकर हरित नदी दक्षिणमुखी ही 7421 1/19 योजन पर्वत के ऊपर जाकर नीचे हरित कुण्ड में गिरती है। वहाँ से दक्षिणमुखी बहती हुई हरिक्षेत्र के नाभिगिरि को प्राप्त हो उससे दो कोस इधर ही रहकर उसकी चौथाई प्रदक्षिणा देती हुई पूर्व की ओर मुड़ जाती है और क्षेत्र के बीचों-बीच बहती हुई पूर्व लवणसागर में गिरती है। इसकी परिवार नदियाँ 56,000 हैं।

(7) निषध पर्वत के तिगिंछहृद के उत्तर द्वार से सीतोदा नदी निकलती है, जो उत्तरमुखी हो पर्वत के ऊपर 7421 1/19 योजन जाकर नीचे विदेह क्षेत्र में स्थित सीतोदा कुण्ड में गिरती है। वहाँ से उत्तरमुखी बहती हुई वह सुमेरु पर्वत तक पहुँचकर उससे दो कोस इधर ही पश्चिम की ओर उसकी चौथाई प्रदक्षिणा देती हुई, विद्युत्प्रभ गजदंत की गुफा में से निकलती है। सुमेरु के अर्द्धभाग के सन्मुख हो वह पश्चिम की ओर मुड़ जाती है और पश्चिम विदेह के बीचों-बीच बहती हुई अन्त में पश्चिम लवणसागर में मिल जाती है। इसकी सर्व परिवार नदियाँ देवकुरु में 84,000 और पश्चिम विदेह में 448038 (कुल 532038) हैं।

(क्रमशः)

संस्कार सुधा संपादक मण्डल - मार्गदर्शक - पण्डित अभयकुमार शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेश शास्त्री नागपुर, श्री अजित जैन बडोदरा। संपादक व स्तंभ प्रभारी - राजकुमार शास्त्री उदयपुर, अजितकुमार शास्त्री अलवर, डॉ. महेश जैन भोपाल, पीयूषकुमार शास्त्री जयपुर, डॉ. महावीरप्रसाद उदयपुर, गणतंत्र शास्त्री आगरा, सुधीर शास्त्री अमरमऊ।

निवेदन - यदि आप संस्कार सुधा के नियमित प्रकाशन में सहयोग करना चाहते हैं तो कृपया सम्पर्क करें - 09414103492 । सहयोगी का नाम यहीं पर इसी बॉक्स में लिखा जायेगा ।

संस्कार सुधा (मासिक)

वीर निर्वाण संवत् 2546

R.N.I. - RAJHIN/2015/69329

INDIA POST REG No. - RJ/UD/29-133/2020-22

राजकुमार जैन द्वारा समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट के लिए प्रकाशित एवं महेन्द्र अग्रवाल प्रिया ऑफसेट कोलीवाड़ा डी.सी.एम. के पीछे उदयपुर से मुद्रित और 18, आदिनाथ कॉलोनी, केशवनगर यूनिवर्सिटी रोड, उदयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित । संपादक (मानद) राजकुमार जैन ।

यदि न मिले तो लौटायें : प्रबंध संपादक, 18, आदिनाथ कॉलोनी, केशवनगर, यूनिवर्सिटी रोड, उदयपुर (राजस्थान) पर प्रेषित करें।

Email : samarpan1008@gmail.com

Book Post

